

कौवे और उल्लू का बैर

एक बार हंस, तोता, बगुला, कोयल, चातक, कबूतर, उल्लू आदि सब पक्षियों ने सभा करके यह सलाह की कि उनका राजा वैनतेय केवल वासुदेव की भक्ति में लगा रहता है, व्याधों से उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं करता; इसलिये पक्षियों का कोई अन्य राजा चुन लिया जाय। कई दिनों की बैठक के बाद सब ने एक सम्मति से सर्वाङ्ग सुन्दर उल्लू को राजा चुना।

अभिषेक की तैयारियाँ होने लगीं, विविध तीर्थों से पवित्र जल मँगाया गया, सिंहासन पर रत्न जड़े गए, स्वर्णघट भरे गए, मंगल पाठ शुरू हो गया, ब्राह्मणों ने वेद पाठ शुरू कर दिया, नर्तकियों ने नृत्य की तैयारी कर लीं, उल्लू राज राज्यसिंहासन पर बैठने ही वाले थे कि कहीं से एक कौवा आ गया।

कौवे ने सोचा यह समारोह कैसा? यह उत्सव किस लिए? पक्षियों ने भी कौवे को देखा तो आश्चर्य में पड़ गए। उसे तो किसी ने बुलाया ही नहीं था। भिर भी, उन्होंने सुन रखा था कि कौआ सब से चतुर कूटराजनीतिज्ञ पक्षी है; इसलिये उससे मन्त्रणा करने के लिये सब पक्षी उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए।

उल्लू राज के राज्याभिषेक की बात सुन कर कौवे ने हँसते हुए कहा, "यह चुनाव ठीक नहीं हुआ। मोर, हंस, कोयल, सारस, चक्रवाक, शुक आदि सुन्दर पक्षियों के रहते दिवान्ध उल्लू ओर टेढी नाक वाले अप्रियदर्शी पक्षी को राजा बनाना उचित नहीं है। वह स्वभाव से ही रौद्र है और कटुभाषी है। फिर अभी तो वैनतेय राजा बैठा है। एक राजा के रहते दूसरे को राज्यासन देना विनाशक है। पृथ्वी पर एक ही सूर्य होता है, वही अपनी आभा से सारे संसार को प्रकाशित कर देता है। एक से अधिक सूर्य होने पर प्रलय हो जाती है। प्रलय में बहुत से सूर्य निकल जाते हैं, उन से संसार में विपत्ति ही आती है, कल्याण नहीं होता। राजा एक ही होता है। उसके नाम-कीर्तन से ही काम बन जाते हैं।

"यदि तुम उल्लू जैसे नीच, आलसी, कायर, व्यसनी और पीठ पीछे कटुभाषी पक्षी को राजा बनाओगे तो नष्ट हो जाओगे।

कौवे की बात सुनकर सब पक्षी उल्लू को राज-मुकुट पहनाए बिना चले गये। केवल

अभिषेक की प्रतीक्षा करता हुआ उल्लू उसकी मित्र कृकालिका और कौवा रह गये।
उल्लू ने पूछा, "मेरा अभिषेक क्यों नहीं हुआ?"
कृकालिका ने कहा, "मित्र! एक कौवे ने आकर रंग में भंग कर दिया। शेष सब पक्षी
उडकर चले गये हैं, केवल वह कौवा ही यहाँ बैठा है।"
तब, उल्लू ने कौवे से कहा, "दुष्ट कौवे! मैंने तेरा क्या बिगाडा था जो तूने मेरे
कार्य में विघ्न डाल दिया। आज से मेरा तेरा वंश परम्परागत बैर रहेगा।"
यह कहकर उल्लू वहाँ से चला गया। कौवा बहुत चिन्तित हुआ और वहीं बैठा रहा।
उसने सोचा, "मैंने अकारण ही उल्लू से बैर मोल ले लिया। दूसरे के मामलों में
हस्तक्षेप करना और कटु सत्य कहना भी दुःखप्रद होता है।"
यही सोचता-सोचता वह कौवा वहाँ से चला गया। तभी से कौओं और उल्लुओं में
स्वाभाविक बैर चला आता है।

कौव ठार उलझा गरी

एक गार रुम, उठे, गगला, कबेल, पाउक, कमर, उलझा मर पबिचने मेरा करक येरु मलारु की कि उनका गार वनेउथे कबेल वामदवे की रुकि,भलगा ररुउ रु,वेए भेउनकी रबा का करे उपाय नलीं करउ; उमलिच पेबिचके करे मनगार एउ लिय रथा करे दिनकी गठेक कगार मर नएक ममउि ममेवार् ग मनगु उलझा गार एउ।

मरिधके की उथेरिचकेने लेगीं, विविण डीरु भेपेविउएल भगीया गथा, भिंरामन पर रउान एरु गार, मरुभए ररु गार, भंगल पां मरु रु गेया, मरुभने वेए पां मरु कर रिया, नरुकिचने ननेउकी उथेरी कर लीं, उलझा गार गारभिंरामन पर गठेन की बाल घेकि कलीं मरुएक कौव सु गथा।

कौवने मेरा वरु मभारके कमे? वरु उउव किम लिय? पबिचने सी कौवके रोपा उथेमरु भपु गार। उमउे किमी ननेलाया की नलीं घा। रिर सी, उनने मेन गारा घा कि कौसु मर मरुउरु कएरुएनीउिइ पबी रु; उमलिच उममभेनरु करन के लिय मेरु पबी उमक गार ठार उकएणं रु गार।

उलझा गार क गारमरिधके की गउ मरु कर कौवने केमउरुए करु, "वरु एउाव ठीक नलीं रुगु भरे, रुम, कबेल, मारम, एरुवक, मरु मुदि मनगु पबिचके रेरुउ रियाव उलझा एडी नक बाल मेपियरुमी पबी करेए गनाना उगिउ नलीं कौवेरु मरुव मलीं रीए रु ठार कएराधी कौदिर मरी उवेनेउथे गार गठे कौएक गार करेरुउ एभर के गारभुन एने विनमक कौपेदी पर एक की मरु रुठे रु, वेकी मपनी मुरा मभार मेभार क पेकामिउ कर एउे कौएक म मेणिक मरु रुनेपर प्लय रु रेडी कौप्लय मरुएरु म मेरु निकल एउ रु, उन म मभार भविपडि, की मुडी रु, कलए नलीं रुठे। गार एक की रुठे कौ उमक नमकीगु मलीं कामगन एउे कौ।

"वदि उभु उलझामे नीण, मुलमी, कावर, वधुनी ठार पीं पीक कएराधी पबी करेए गनाना उने नपलु रएउग।

कौवकी गउ मरुकर मरु पबी उलझा गार-भरुए परनार गिन एल गेयाकबेल मरिधके की पडीबा करउ रुगु उलझामकी भिउ ककुलिका ठार कौव ररु गथा उलझा पेका, "भरे मरिधके कनेनीं रुगु?"

ककुलिका न केरा, "भिउ! एक कौवने मुकर रंग भरुंग कर रिया। मधे मरु पबी उरुकर एल गथ रु, कबेल वरु कौव की वरु गठे कौ।

उम, उलझा कौवभ केरा, "एधुकेवा भने उरा कृ गिगारा घा ए उेरु भरे कएट भविपुल रिया। मुए मभेरा उरा वम परमगुगउ गरे ररुगे।"

वरु करुकर उलझा भे गेला गथा। कौव गरुउ गिनिउ रुगु ठार वलीं गठे ररु। उमन मेरा, "भने मेकारु की उलझा गरे भले ल लिय। एभर के भेभल भेरुमरुपे करन ठार कए मउे करन सी एापए रुठे कौ।

वलीं मरुउ-मरुउ वरु कौव वरु भे गेला गथा। उसी म कौठ ठार उलझा भभेराविक गरे एला मुउा कौ।

मनगार - विरु कौल एला

